प्रातः क्लास 11/1/69 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। क्योंकि यह तो बच्चे समझते हैं बेसमझ को ही पढ़ाया जाता है। अभी बेहद का बाप ऊंच ते ऊंच भगवान आते हैं तो किसको पढ़ाता होगा? जरूर जो बिल्कुल ही ऊंच ते ऊंच बेसमझ होंगे। इसलिये कहा ही जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि कैसे हो गई है? 84 लाख योनियां लिखा हुआ है ना तो बाप को भी 84 लाख योनियों में ले आये हैं। सर्वव्यापी के हिसाब से उन्हों की बुद्धि में 84 लाख योनियां आती हैं। बच्चों को समझाना होता है ना। यह तो सेकण्ड नम्बर की पायन्ट देनी होती है। बाप ने समझाया है जब कोई नया आता है तो पहले2 उनको हद के और बेहद के बाप का परिचय देना चाहिए। वह है बेहद का बड़ा बाबा। वह है हद का छोटा बाबा। बेहद का बाप माना ही बेहद के आत्माओं का बाप। वह हद का बाप हरेक जीवात्मा का अलग बाप हो गया। वह है सभी आत्माओं का बाप। यह नॉलेज भी सभी एकरस नहीं धारण कर सकते हैं। कोई 1% धारण करते हैं तो कोई 95% धारण करते हैं। वन परसेंट वाले भी हैं जरूर। यह तो समझ की बात है सूर्यवंशी घराणा होगा ना। राजा–रानी तथा प्रजा। यह बुद्धि में आता है ना। प्रजा में सभी प्रकार के मनुष्य होते हैं। प्रजा माना प्रजा। बाप समझाते हैं यह पढ़ाई है। हरेक अपनी बुद्धि अनुसार ही पढ़ाते हैं। हरेक को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। जिसने कल्प पहले जितनी पढ़ाई की है उतनी अभी भी करते हैं। पढ़ाई कब छिपी नहीं रह सकती है। पढ़ाई अनुसार ही पद मिलता है। बाप ने समझाया है आगे चल इम्तहान तो होगा ही। बिगर इम्तहान ट्रान्सफर हो न सके। तो पिछाड़ी में सभी मालूम पड़ेगा; परन्तु अभी भी समझ सकते हैं। हम किस पद के लायक हैं। भल लज्जा के मारे सभी साथ हाथ उठा लेते हैं। दिल में समझते भी हैं हम यह कैसे बन सकेंगे। तो भी हाथ उठा देते हैं। समझते हुये भी फिर हाथ उठा लेना यह भी अज्ञान ही कहें। कितना अज्ञान है। बाप तो झट समझ जाते हैं। इससे तो जास्ती अक्ल लौकिक स्टूडेन्ट में होता है, वह समझते हैं हम स्कालरशिप लेने लायक नहीं हूँ। पास नहीं होंगे। इससे तो वह अज्ञानी अच्छे तो समझते हैं टीचर जो पढ़ाते हैं उसमें हम कितने मार्क्स लेंगे। ऐसे थोड़े ही कहेंगे हम पास विद् ऑनर होंगे। तो सिद्ध होता है यहां इतनी भी बुद्धि नहीं। देह–अभिमान बहुत है। भल आये तो हो यह बनने लिये; परन्तु यह बनने लिये चलन बहुत अच्छी चाहिए। बाप कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। बड़े2 अच्छे2 महारथियों के लिये भी कह देते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। क्योंकि कायदे सिरे बाप से प्रीत नहीं है। तो उनका क्या हाल होगा। ऊँच पद पा न सकेंगे। शास्त्रों में कोई एक्युरेट लिखत तो नहीं है। कितने गपोड़े हैं बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि का यथार्थ अर्थ क्या है। बच्चे ही पूरा नहीं समझ सकते हैं तो फिर और क्या समझेंगे। जो बच्चे समझते हैं हम शिवबाबा के बच्चे हैं वही पूरा अर्थ को नहीं समझते हैं। बाप को याद करना यह तो हुआ गुप्त बात। पढ़ाई तो गुप्त नहीं है ना। पढ़ाई में नम्बर होते हैं। सभी एक जैसा थोड़े ही पढ़ेंगे। बाप तो समझते हैं अजुन अभी बेबीज है, नहीं तो ऐसे बेहद के बाप को तीन–2/चार–2 मास कब याद भी नहीं करते हैं। मालूम कैसे पड़े कि याद करते हैं। जबकि चिट्ठी आये फिर उस चिट्ठी में समाचार भी हो, यह यह रूहानी सर्विस करता हूँ। सबूत चाहिए ना। ऐसे जो देहअभिमानी होते हैं जो कब याद नहीं करते हैं। न सर्विस का सबूत दिखाते हैं। सर्विस का सबूत दे नहीं सकते। कोई समाचार लिखते हैं बाबा फलाने2 आये, उनको यह समझाया, तो बाप भी समझते हैं बच्चा जीता तो है सर्विस का समाचार ठीक देते हैं। कई तो 3/4 मास तक कोई पत्र नहीं लिखते हैं। कोई समाचार तो समझेंगे मर गया या बीमार है। बीमार मनुष्य लिख नहीं सकते हैं। कोई यह भी लिखते हैं हमारी तबीयत ठीक नहीं थी इसलिये पत्र नहीं लिखा। कोई तो समाचार ही नहीं देते। न बीमार है। देहअभिमान है। बाबा मुरली में समझाते हैं, बस वह नशा और अहंकार आया। हम चिट्ठी न लिखेंगे, पत्र न लिखेंगे तो वह याद ठहरी? फिर बाप भी किसको याद करे? याद से याद मिलती है। ऐसे देहअभिमानी टट्टू बहुत ही हैं। रावण के ऊपर भी गदहा दिखाया है ना। ऐसे भी कहते हैं तुम तो देहअभिमानी टट्टू हो। यह भी कहावत कहते हैं टट्टू को टारा,

काजी को इशारा। टट्टू को चाबूक से मारा जाता है। कोई जानवर इशारे से भी चलते हैं कोई चाबूक मारने से चलते हैं। मनुष्य तो जानवर से भी बदतर हैं। बाप आकर कहते हैं मुझे सर्वव्यापी कहने से टट्टू कहो, वेबकूफ कहो, उल्लू, पाजी कहो बन पड़े हैं। सर्वव्यापी अर्थात् 84 लाख से भी जास्ती योनियों में ले जाते हैं। मनुष्यों को तो कहा जाता है पत्थर बुद्धि हैं। भगवान के लिये तो फिर कह देते पत्थर–भित्तर में अन्दर विराजमान है। तो सभी की गालियां हुई ना। इसलिये बाप कहते हैं मेरी कितनी ग्लानि करते हैं। अभी तुम तो नम्बरवार समझ गये हो। भक्ति मार्ग में गाते भी हैं आप आवेंगे तो हम वारी जावेंगे। आप को वारिस बनावेंगे। यह वारिस बनाते हैं जो कहते पत्थर–ठिक्कर में हो। कितनी ग्लानि करते हैं। तब बाप कहते हैं यदा यदा हि ..... अभी तुम बाप को जानते हो तो बाप की कितनी महिमा करते हो। कोई तो महिमा तो क्या कब याद कर दो अक्षर लिखते भी नहीं हैं। देहअभिमानी बन पड़ते हैं। माया पूरा टट्टू बना देती है। बाप को जैसे जानना चाहिए ऐसे नहीं जानते हैं। तुम बच्चे समझते हो हमको बाप मिला है। हमारा बाप हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच है ना। मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। विश्व की राजाई कैसे प्राप्त होती है उसके लिये राजयोग सिखाता हूँ। तुम अपन को थोड़ेही ऐसे समझते हो हम विश्व के बादशाही लेने लिये बेहद के बाप से पढ़ते हैं। यह नशा हो तो अपार खुशी आ जाये। भल गीता भी पढ़ते हैं कृष्णभगवानुवाच मैं राजयोग सिखाता हूँ। बस। इतना बुद्धि का योग वा खुशी नहीं रहती। गीता पढ़ने वा सुनाने वालों में इतनी खुशी नहीं रहती है। गीता पढ़कर पूरी की और गया अपने धंधे में। तुमको तो अभी बुद्धि में है बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं और कोई की बुद्धि में यह नहीं आवेगा कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। कृष्ण जो सभी से पूरे 84 जन्म लेते हैं उनका नाम रख दिया है। तो पहले2 को(ई) भी आवे तो उनको दो बाप की थ्योरी समझानी है। बोलो, भारत स्वर्ग था ना। अभी नर्क है। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। यह कलियुग है। इनको सतयुग नहीं कहेंगे। ऐसे तो नहीं कहेंगे हम सतयुग में भी हैं, कलियुग भी हैं। स्वर्ग नर्क दोनों इकट्ठे हैं। किसको दुःख मिला तो नर्क में है। कोई सुखी है तो स्वर्ग में है। ऐसे बहुत कहते हैं। दुःखी मनुष्य नर्क में हैं, हम तो बहुत सुख में बैठे हैं। महल–माड़ियां आदि सभी कुछ हैं। बाहर का बहुत सुख देखते हैं ना। यह भी तुम बच्चे समझते हो सतयुगी सुख तो यहां हो न सके। ऐसे भी नहीं गोल्डेन एज को आयरन एज कहो अथवा आयरन एजेड को गोल्डेन एज कहो। एक ही बात है। ऐसा समझने वालों को भी अज्ञानी टट्टू कहेंगे। तो पहले2 बाप की थ्योरी बतानी है। बाप ही अपनी पहचान देते हैं और तो कोई जानते ही नहीं। कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। अभी तुम चित्र में दिखाते हो। आत्मा और परमात्मा का रूप तो एक ही है। उसमें फर्क नहीं। आत्मा कोई छोटी बड़ी नहीं होती है। सभी आत्माएं हैं। वह सभी आत्मा है; परन्तु उनको परम आत्मा कहा जाता है अर्थात् वह सदैव परमधाम में रहने वाला है। कब यहां आने वाला नहीं। फिर वह चीज क्या काम की ठहरी जो कब यहां आवें ही नहीं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। कैसे मैं आता हूँ। सभी आत्मा वहां परमधाम में रहती हैं। यह बातें तो बाहर कोई कोई समझ न सके। भाषा भी तुम्हारी बहुत अच्छी है। सहज है। कोई कठिन नहीं। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। अभी कृष्ण तो गीता सुनाते ही नहीं हैं। वह तो सभी को कह न सके मामेकं याद करो। देहधारी कह न सके मामेकं याद करो अर्थात् कृष्ण को याद करो। देहधारी की याद से तो पाप नहीं कटेंगे। पापात्मा जो बने हैं वह पाप कैसे कटे। श्रीकृष्ण भगवानुवाच देह के सभी सम्बन्ध त्याग मामेकं याद करो; परन्तु देह के सम्बन्ध तो कृष्ण को भी है ना और फिर भी छोटा बच्चा है। यह भी कितनी बड़ी भूल है। कितना फर्क पड़ जाता है एक भूल के कारण। शिवबाबा को शिवबाबा ही समझकर पूजते हैं। कृष्ण को कृष्ण समझ ही पूजते हैं राम को राम समझ पूजते हैं। ऐसे तो नहीं सभी को कृष्ण समझेंगे। जिधर देखता हूं कृष्ण ही कृष्ण है। वह तो नाम रूप वाला है ना। आत्मा को तो जिधर देखो उधर विराजमान है ही। बाकी शरीर सभी के भिन्न2 हैं। आत्मा सर्वव्यापी है यह बिल्कुल राइट है। बाप परमात्मा तो सर्वव्यापी हो नहीं सकता। जिसके लिये कहते हैं सर्व की सद्गति दाता है। तो क्या वह भी .....

को पाते! परमात्मा कब दुर्गति को पाता है क्या। यह सभी विचार–सागर–मंथन करने की बात है। टाइम वेस्ट करने की बात नहीं। मनुष्य तो कह देते हैं हमको फुर्सत नहीं है। तुम समझाते हो कि आकर कोर्स लो। तो कहते फुर्सत नहीं। दो दिन आवेंगे फिर 4 दिन नहीं आवेंगे। पढ़ेंगे ही नहीं तो यह ल0ना0 कैसे बन सकेंगे? माया का कितना फोर्स है। बाप का न बनने, न पढ़ने में कितना अफसोस करती है। नई बात नहीं। कल्प2 होता आया है। बाप समझाते हैं जो सेकण्ड, मिनट पास होता है वह हूबहू रिपीट होती है। अनगिनत बारी रिपीट होते रहेंगे। अभी तुम बाप द्वारा सुन रहे हो। शिवबाबा खुद जन्म–मरण में नहीं आते हैं। भेंट की जाती है पूरा जन्म–मरण में कौन आता है और न आने वाले कौन। सिर्फ़ एक बाप ही है जो जन्म मरण में नहीं आता। बाकी तो सभी आते हैं। इसलिये चित्र भी दिखाया है ब्रह्मा और विष्णु दो ही जन्म–मरण में आते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। पार्ट में आते जाते ही रहते हैं। एन्ड हो न सके। यह चित्र फिर भी सभी आकर देखेंगे और समझेंगे। बहुत सहज समझने की बात है। बुद्धि में आना चाहिए हम सो ब्राह्मण हैं फिर हम सो क्षत्रिय, शूद्र बनेंगे, फिर बाबा आवेंगे तो हम सो ब्राह्मण बनेंगे। यह भी याद करो तो भी स्वदर्शनचक्रधारी ठहरे। बहुत हैं जिनको याद ठहरती ही नहीं है। तुम ब्राह्मण ही स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। देवताएं नहीं बनते हैं। यह नालेज कि चक्र कैसे फिरता है इस नालेज को पाने से वह यह देवता बने हैं। वास्तव में कोई भी मनुष्य स्वदर्शचक्रधारी कहलाने के लायक नहीं हैं। मनुष्यों की सृष्टि मृत्युलोक ही अलग है। जैसे भारतवासियों की रसम अलग है सभी का अलग2 होता है। देवताओं की रसम रीवाज अलग, मृत्युलोक के मनुष्यों की रसम–रिवाज अलग होता है। रात दिन का फर्क है। इसलिये सभी कहते हैं हम पतित हैं। हे! भगवान, हम सभी पतित दुनियां (के) रहने वालों पतितों को आकर पावन दुनियां के रहने वाले पावन देवता बनाओ। तुम्हारी बुद्धि में है आ(ज) से 5000 वर्ष पहले पावन दुनियां थी। जिसको सतयुग कहा जाता है। त्रेता को नहीं कहेंगे। बाप ने समझाया है यह है फर्स्ट क्लास। वह है सेकण्ड क्लास। तो एक एक बात अच्छी रीत धारण करनी चाहिए। जो कोई भी आवे तो सुनकर वन्डर खावे। कोई2 वन्डर खाते हैं; परन्तु फिर उनको फुर्सत नहीं रहती जो पुरूषार्थ करें। फिर सुनते हैं पवित्र जरूर बनना है। यह काम विकार ही मनुष्य को पतित बनाते हैं। उनको जीतने से तुम यह जगत जीत बनेंगे। बाप ने कहा भी है काम विकार जीत जगत जीत बनो। काम जो इन्हों की पूंजी है इसके लिये वह .... बोलते नहीं है। कहते हैं मन को वश करो। अब मन अमन तो तब हो जब कि शरीर न हो। बाकी मन अमन तो कब होता ही नहीं। देह मिलती ही है कर्म करने के लिये। तो फिर कर्मातीत अवस्था में कैसे रहेंगे। कर्मातीत अवस्था कहा जाता है मुर्दे को। जीते जी मुर्दा। शरीर से न्यारा। तुमको भी शरीर से न्यारा बनने की पढ़ाई है। शरीर से आत्मा अलग है। आत्मा परमधाम के रहने वाली हैं। आत्मा शरीर में आती है तो उनको मनुष्य (कहा) जाता है। शरीर मिलता ही है कर्म करने लिये। एक शरीर छूट जावेगा फिर दूसरा शरीर आत्मा को लेना है करने लिये। शान्ति तो तब रहेगी जब कर्म न करना हो। मूलवतन में कर्म होता ही नहीं। सूक्ष्मवतन की तो ..... ही नहीं। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं। सृष्टि का चक्र यहां फिरता है। बाप को और सृष्टि चक्र को जान... हैं। इसको ही नालेज कहा जाता है। सूक्ष्मवतन का तो नाम ही नहीं। न सफेद पोशधारी होते, न जेवर वाले, न नाग–बलाएं पहनने वाले शंकर ही होते हैं। बाकी ब्रह्मा और विष्णु का राज़ बाप समझाते रहते हैं .... यहां हैं। विष्णु के दो रूप भी यहां हैं। वह सिर्फ़ सा0 के कारण पार्ट ड्रामा में है। जो दिव्य–दृष्टि से देखा है। यह तो आँखें पतित क्रिमनल हैं, तो इन आंखों से पवित्र चीज देखने में नहीं आ सकती। लायक ही नहीं इसलिये दिव्य दृष्टि, ज्ञान का तीसरा नेत्र चाहिए। जब तुम कर्मातीत अवस्था को पावेंगे अर्थात् देवता बनेंगे ..... इन आंखों से देवताओं को देखते रहेंगे। बाकी इस शरीर में आंखों से कृष्ण को देख न सके। बाकी सा0 किया .... भी क्या हुआ। इससे कुछ मिलता थोड़े ही है। अल्प काल के लिये खुशी होती है। कामना पूरी हो जाती है। ड्रामा में सा0 की भी नूंध है। इस समय बाप समझाते हैं यह सा0 आदि तो भक्ति मार्ग के हैं। सा0 से प्राप्त

(कुछ) नहीं है। सिर्फ देखा। वह जड़ यह करके चैतन्य देखने में आवेंगे। बन तो नहीं जावेंगे। खुशी होगी। जादूगर का खेल देखने से ही खुशी होती है ना। वह तो है अल्प काल की बात। यह तो प्रैक्टीकल में बनने की बात है। .... हम सदा सुखी बने। बाकी दीदार इन आंखों से भी करते हो। दिव्य दृष्टि से भी तुम यही देखेंगे। फर्क नहीं है। तो बाप भिन्न2 प्रकार से समझाते रहते हैं। जब कोई आवे तो बाप और चक्र का राज समझाओ। चक्र को याद करने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बाप को याद करने से पावन बनेंगे। पावन है सतयुग की राजाई। पतित है नर्क की राजाई। नर्क की वास्तव में राजाई थोड़े ही कहेंगे। नर्क में तो मनुष्य दुःखी होते हैं ना। अभी चेंज होती है। पुरानी दुनियां सो नई दुनियां जरूर बननी है। मनुष्य समझते नहीं हैं। वह समझते हैं चेंज होने में 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तो घोर अंधियारा हुआ ना। अन्धश्रद्धा में घोर अंधियारे में ही खत्म हो जाते हैं। आगे चल जानते भी जावेंगे। ऐसे नहीं कि सभी मर जावेंगे। लड़ाइयाँ तो लगती ही रहती हैं। कहते हैं असुरों और देवताओं की भी लड़ाई लगी। अभी आसुरी रावण–राज्य चेंज होना है। तो जरूर लड़ाई लगी होगी। इसका नाम महाभारत लड़ाई रखा हुआ है। उनका सा0 भी किया था। चतुर्भुज का भी सा0 किया। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हम चतुर्भुज बनते हैं। पुरानी दुनियां का विनाश भी जरूर होगा। तो बातें तो सभी ठीक हैं ना। अभी तुम समझते हो यह दुनियां चेंज भी जरूर होगी। नई दुनियां में यह देवताएं थे। तुम समझते हो बाप हमको पढ़ाते हैं। तो जरूर हम ही देवताएं थे। हमको ही बाप मनुष्य से देवता बनाते हैं। 84 जन्म भी हमने लिये हैं। आगे चल कर बहुत इन बातों को मानेंगे। समझेंगे बरोबर देवी देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं और सभी कम। सभी 84 जन्म कैसे लेंगे। आगे चल तुम बहुत समझदार बनते जावेंगे। इसलिये यह म्युजियम आदि भी खोलते जाते हो, जिससे विहंग मार्ग की सर्विस हो। विहंग मार्ग और चींटी मार्ग यह नाम भी अभी के ही हैं। बच्चे भी कोई विहंग मार्ग से पढ़ते हैं कोई चींटी मार्ग से पढ़ते हैं। तो चढ़ ही नहीं सकते हैं। विहंग मार्ग वाले अच्छी रीत पढ़ते हैं। बहुतों को समझाते हैं। चींटी मार्ग वाले समझा न सके। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार है ना। सभी एक/दो को जानते हैं। स्टूडेन्ट को कब पढ़ाई बिगर कब सुख नहीं आवेगा। पढ़ते ही रहेंगे। बाप भी कहते हैं आज तुमको गुह्य2 बातें सुनाता हूं। कोई समय ऐसी गुह्य बातें सुनेंगे जो कान खुल जावेगा। झट निश्चय हो जावेगा। जरूर कोई अच्छी बात सुनावेंगे जो कहेंगे अब हमने समझा। आगे यह नहीं समझते थे। अब समझा। यह पढ़ाई ऐसी है जिससे मनुष्यों के संशय दूर हो जाते हैं। फिर वह अपना अनुभव बैठ बताते हैं बरोबर हमने फलानी मुरली सुनी। इस प्वाइन्ट्स से हमको अच्छा निश्चय हो गया। होता भी ऐसे ही हैं जैसे कल्प कल्प होता है। इतने सभी बच्चे ऐसे ही कहते हैं कल्प पहले मिसल अब निश्चय बुद्धि बना हूँ। बरोबर भगवान बिगर यह नालेज, रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त के कोई समझाय न सके। भगवान बिगर यह चित्र कोई बना न सके। आगे यह चित्र थे क्या? त्रिमूर्ति के ऊपर कब शिवबाबा का चित्र देखा? अभी समझते हो यह तो यथार्थ चित्र हैं। पहले हम भी अयथार्थ थे। बाप को सर्वव्यापी कह दिया, बाकी सभी चित्र रख दिये हैं। अब ज्ञान तो बहुत ही मिलता है। मूल बात है बीज और झाड़। सारा 84 का चक्र याद रहेगा। बाकी डिटेल जो इतने सुने हैं वह किसको सुना सकेंगे क्या? ऐसी पढ़ाई कोई होती है क्या? तुम्हारे में भी नम्बरवार महारथी, घोड़े सवार, प्यादे हैं। घोड़े सवार की धारणा ही इतनी है जितना वह पढ़ा सकते हैं। कोई तो पढ़ा ही नहीं सकते। चलन भी पढ़ाई से सुधरती है। कैरेक्टर्स के ऊपर बहुत ध्यान देना पड़ता है। घर और सुखधाम याद आवे तो भी कितनी अथाह खुशी आवे।

अच्छा, मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

शिवबाबा और बेहद की बादशाही याद है ?